International Journal of Sanskrit Research 2019; 5(5): 15-16

International Journal of Sanskrit Research

अनन्ता

ISSN: 2394-7519
IJSR 2019; 5(5): 15-16
© 2019 IJSR
www.anantaajournal.com
Received: 09-07-2019
Accepted: 12-08-2019

**डा॰ रमा यादव**
पी. एच. डी. संस्कृत प्रवक्ता
हरिमंगल डिग्री कॉलेज, बिलारी,
उत्तर प्रदेश, भारत।

**Correspondence**
**डा॰ रमा यादव**
पी. एच. डी. संस्कृत प्रवक्ता
हरिमंगल डिग्री कॉलेज, बिलारी,
उत्तर प्रदेश, भारत।

# सखीभावोपासना और तन्त्र ग्रन्थ

## डा॰ रमा यादव

### प्रस्तावना

सखी भाव की साधना में श्री राधा का प्रावधान्य होने के कारण अनेक विद्वान इसे शक्तिवादी मान बैठते हैं। शाक्तों की साधना पद्धति तान्त्रिक है।

सखी भाव की साधना पद्धति को भी दूर से लोग तान्त्रिक भी समझ लेते हैं। यही कारण है कि रास लीला को कुछ विद्वानों ने वाम मार्गियों की चक्रपूजा की नकल माना है। राधा प्राधान्य को शक्ति प्राधान्य मानकर कुछ विद्वानों ने सखी भावोपासक राधा वल्लभ सम्प्रदाय को शाक्त सम्प्रदाय भी घोषित कर दिया है। विदेशी ही नहीं इस देश के कई विद्वान भी इन सम्प्रदायों को तान्त्रिक मानने की भ्रान्ति कर बैठे हैं। शैव शाक्त और बौद्ध तन्त्रों में सखी भावना के उपास्य स्वरूप युगल तत्व के बीज देखे जा सकते हैं। इसका कारण ये है कि मिथुन तत्व की मान्यता सार्वत्रिक है दूसरे इन सबी युगल मान्यता का आधार शक्तिवाद है जबकि सखी भाव केवल प्रेम के सुकुमार रूप को लेकर चला है। वैष्णव तन्त्रों का वैष्णव धर्म से सीधा सम्बन्ध है। मेरी दृष्टि मे प्रायः सभी प्रचीन वैष्णव सम्प्रदाय वैष्णव तन्त्रवाद के अनुयायी है।

उत्तर भारत के निम्बार्क सम्प्रदाय का अधिकांश साहित्य वैष्णवों के तान्त्रिक आधार का समर्थन करता है। अन्य सम्प्रदायों में भी बहुत कुछ अंशों में भी विशेषता पाई जाती है। [1]

### साहित्य ग्रन्थ एवं सखी भाव

श्री कृष्ण का स्वरूप विकास भारतीय साहित्य के माध्यम से हुआ है। यह मान्यता अब व्यापक हो चली है। वेदों से लेकर भक्तिकाल तक श्रीकृष्ण के विकास की विभिन्न स्थितियाँ अन्य अन्वेशकों ने प्रस्तुत की हैं, परन्तु श्री राधा का विकास धर्म क्षेत्र से न होकर विशुद्ध साहित्य के क्षेत्र से हुआ है। [2]

सखी भाव के उपास्य राधा कृष्ण अथवा नित्य बिहारी का जो स्वरूप है दार्शनिक आधार पर प्रतिष्ठित होते हुए भी उसके लीला विकास का स्रोत पूर्णतः साहित्यिक है। सखी भाव की उपासना वस्तुतः प्रेमलीला है। लीला का यह माह मधुर रस पारिभाषिक दृष्टि से पूर्णतया दिव्य होते हुए भी स्वरूप और प्रक्रिया में काव्यगत श्रृंगार रस के निकट है। अतः साहित्य ग्रन्थों की विकुल राशि में उसके महत्वपूर्ण अंश श्रृंगार रस से ही सखी भाव के काव्य का सम्बन्ध निश्चित हो जाता है।

### लक्षण ग्रन्थों की सूची

भारत के प्रसिद्ध रस निष्पत्ति में सम्बन्धित सूत्र के अनुसार सखी का अन्तर्भाव श्रृंगार रस के सहायकों में होता है। काव्य शास्त्र में कहा गया है कि माल्यादि अलंकारों से प्रियजन की गान एवं काव्य सेवाओं द्वारा तथा उपवन में गमन विहार आदि से श्रृंगार रस का उद्भव होता है। [3]

प्रायः ऐसा प्रतीत होता है कि लक्षण ग्रन्थों में प्रथमतः दूतों को ही विशेष रूप से नायक–नायिका के मिलन का हेतु माना गया था। प्राचीन काल में पत्र प्रेषण की या अन्य आज की सुविधा न होने के कारण दूती से काम लिया जाता था क्योंकि स्त्रियाँ इस कार्य में विशेष सहायक हो सकती थी उनका प्रवेश अन्तःपुर में होता था। सामान्य रूप से प्राप्त हो जाने वाली दूतियाँ, दासी, प्रतिवैश्या, सखी, कुमारी, दासशिल्पिका, धाय, पाखण्डिनी आदि होती थीं। भरत नाट्य शास्त्र में दूती के भेद भी कहे गये हैं। [4]

साहित्य दर्पण में भी नटी, दासी, पड़ोसिन, बालिका, परिव्याज्जिका धोवन आदि होती थी। [5]

प्रेमी प्रेमिकाओं में कुछ विशेष दूतियों का होना आवश्यक था। कुशल मधुर वचन बोलने वाली सुशोभिता, मनत्र चतुरा, स्मृतिवती, रहस्यपण्डिता, स्वामिनी के प्रति भक्तिनी आदि। साहित्य में अनेक

ऐसे प्रसंग आते हैं अगर दूती स्वामिनी भक्त नहीं होगी तो वह स्वयं नायक से रमण भी कर लेती थी। मम्मट की दूतिका कुछ ऐसी है। [6]

सखी का कार्य व्यापार बहुत विस्तृत है। अनेक बार सखी नायक को फिर नायिका को मिलन के लिए मनाती है दोनों में कलह होत तोउसको शान्त कराती है।

साहित्य दर्पण कार ने कहा है– [7]

## साहित्य ग्रन्थ और श्रृंगार लीला

काव्य के नव रसों में श्रृंगार रस राज है वो अधिक आह्लाद जनक और मधुर है।

अतः रसराज का साहित्य में विशेष महत्व है। महाकवि कालीदास के प्रसिद्ध नाटक अभिज्ञान शाकुन्तलम् में नायक नायिकाओं के मिलन में सखियों का विशेष महत्व है। अनुसूया और प्रियम्वदा शकुन्तला की दो सखियाँ हैं।

राजा दुष्यन्त और शकुन्तला के मिलन में इन दोनों सखियों की विशेष भूमिका है।

मुक्तक ग्रन्थों में प्रायः भावपूर्ण मार्मिक पद्यों का संकलन किया गया है। गाथा सप्तशति, अमरु शतक, श्रृंगार सप्तशति इसके समरूप उदाहरण हैं। इस प्रकार कहीं सखियों के साथ नायिका का मृदु परिहास, कहीं सखियों के द्वारा बताये गये मार्ग पर चलने में असफल नायिका के द्वारा भावोत्तेजना के कारण अपनी असमर्थता का प्रकाशन, कहीं श्रृंगार क्रीड़ा के नियमित अवसर लाने का प्रयत्न, कहीं अवसर देकर चले जाना आदि। [8]

गीत गोविन्द में श्री कृष्ण का व्यवहार सभी ब्रजांगनाओं के साथ माना गया है। राधा उसमें विशिष्ट अवश्य थीं। गीत गोविन्द के शब्द, भाव, भाषा शैली का पूर्णतया अनुसरण परवर्ती वैष्णव कवि ने किया। गीत गोविन्द में जिस प्रेम तत्व का विवेचन है वह अनेक नारियों के बीच होने के कारण अपने एकान्तिक रूप में प्रस्फुटित न हो सका। काल क्रमानुसार राधा कृष्ण प्रणय लीला की धारा संस्कृत से निकलकर मैथिली में विद्यापति, बंगला में चण्डहास आदि में भी देखी जाती है।

सखियों के विशिष्ट महत्व की दृष्टि से सखीभाव महत्वपूर्ण बन गया। सृष्टि का कारण और आदितत्व ऋषियों ने काम को माना है। ऋग्वेद कहता है –

कामस्तदग्रे समवर्तताधि
मनसोरेता प्रथमं यदासीता
सतो बन्धुमसति निरविंदन हृदि
प्रतीष्या कवयो मनीषा। [9]

यह अखिल जड़चेतन मय जगत द्वन्दात्मक है। द्वन्द का अनोन्याकर्षण ही काम है। कवि कुल गुरु कालीदास ने लता, तरुओं में भी इस भावना को देखा।

पर्याप्त पुरापस्तवकस्तनाभ्यः स्फुरत् प्रवालोष्ठ मनोहराभ्यः।
लता वधूम्यस्तखोऽन्य वापुर्विनमुशाखा भुजबन्धनानि।। [10]

संक्षेप में कामभाव से श्रीकृष्ण को गोपियों ने भेजा था। गोपी भाव के अन्य भक्तों ने भी कामानुगा भक्ति स्वीकृत की। कामरूपानुगामिनी यह भक्ति सम्भोगेच्छामयी और तद्भावेच्छामयी होती है।

सम्भोगेच्छामयी में भक्त स्वयं रिरंशा रखता है परन्तु तद्भावेच्छामयी भक्ति में उस मधुर मूर्ति की माधुरी की ओर देखकर तथा लीला का श्रवण कर सन्तुष्ट होता है। प्रथम में सकामता है द्वितीय में निष्कामता है। प्रथम में श्रीकृष्ण के प्रति कान्ताभाव है द्वितीय में राधा के प्रति सखी भाव।

निसन्देह सखीत्व भाव दृष्टि से अधिक सूक्ष्म और सात्विक है। प्रिया–प्रियतम की नित्य रति में निष्काम होकर उसका संयोजन आदि करना यही सखी का कार्य है। सखीभाव की उपासना अप्राकृत काम की उपासना है। मेरा विचार है कि सखी भाव के साहित्य में राधा कृष्ण की जो श्रृंगार लीलाऐं हैं उनमें कामशास्त्र के अनुसार काम की प्रायः समस्त दशाओं का चित्रण होता है। परन्तु इस साहित्य के काम स्वरूप को सामान्य काम से सम्बन्धित न मानकर दिव्य काम का स्वरूप मानना चाहिए।

## संदर्भ


1. राम ग्रन्थ रसक सम्प्रदाय का भूमिका भाग – गोपीनाथ कवि राज, पृष्ठ–7
2. श्री राधाक्रम कर विकास – श्री शशिभूषण दास गुप्त, पृष्ठ सं०–100
3. श्रतुमाल्यादलंकारै प्रियजन गन्धर्वकाव्य सेवाभिः – भारत नाट्य शास्त्र, 6–47
4. प्रतिवेश्या सखी दासी कुमारी दासशिल्पिका धात्री पाखण्डिनी चैव द्वितीय तीक्षणिका नाट्य शास्त्र, 25–10
5. दूता सखी नटी, दासी, धात्रेयी, प्रतिवेशनी, बाला, प्रवृणता का रूप शिल्पिका दया स्वंजना। साहित्य दपर्ण, 3–128
   कला कौशमुतसाहो भक्तिचित्रस्वाता, स्मृति माधुर्य नर्म विज्ञानं वाग्यिता चेती दर्पणा, साहित्य दर्पण, 3–129
6. निश्शेषच्युतचन्दनं स्तनतटं निर्मृष्टरागोऽण्धरो
   नेत्रे दूरमनञ्जने पुलकिता तन्वी तवेयं तनुः।
7. काव्य प्रकाश
   सा पत्युः प्रथमा पराध समये संख्योपदेशं बिना,
   ना जानाति सविभ्रमांगवलना वक्रोक्ति संसूचनम।
   स्वच्छैरच्छ कपोल मूल गलितैः पर्यस्तनेत्रोत्पला,
   बालाकेवलमेव रोदिति लुठल्लोलालकैस्श्रुभिः।
   अमरु शतक–29
8. तद्वत्राभिमुखं मुखं विनमितं दृष्टिः कृता पादयो–
   स्तस्यालापकुतूहला कुलतरे श्रोत्रे लिरुद्धेमया।
   पाणिभ्यां च तिरस्कृतः सपुलकः स्वेदोदगमोगण्डयो
   सख्यः किं करवाणि यान्ति शतधायत्कंचुके संधयः
   चपलहृदयकिं स्वातंत्रयात्तथा गृहमागत
   श्चरणपतितः प्रियं समुपेक्षितः।
   तदिदमधुना यावज्जीवं निरस्त सुखोदया
   रुदितशरणा दुर्जातानां सहस्व रुषां फलन्।।
   अमरु शतक, 11
   अमरु शतक, 56
9. ऋग्वेद, 10वें मण्डलका 129
10. कुमार सम्भव, 3–39